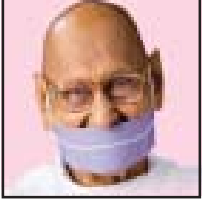


जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज संरचना का संकल्प



मनुष्य में मौलिक मनोवृत्तियाँ और संवेग होते हैं। संवेग जीवन को बहुत प्रभावित करते हैं। इसलिये उन पर अनुशासन करना विकासशील प्राणी के लिये बहुत आवश्यक है। विद्यार्थी के जीवन में इसकी समस्या संक्रमण काल में आती है। जब दो अवस्थाओं का संधिकाल होता है तब

एक खतरनाक मोड़ उपस्थित होता है। आठ-नौ वर्ष की अवस्था, ग्यारह-बारह वर्ष की अवस्था और सतरह-अठारह वर्ष की अवस्था—ये तीन ऐसे मोड़ हैं जहाँ अत्यन्त सावधानी और सजगता की जरूरत रहती है। शिशु किशोर बनता है, उसकी मांसपेशियाँ शक्तिशाली बनती हैं और उसके शरीर में शक्ति का प्रारम्भ होता है। यह किशोरावस्था की दहलीज है। इस पर पैर रखते ही कुछ शारीरिक परिवर्तन होते हैं, क्रियाएं बदलती हैं। यौवन के बीज अंकुरित होने लगते हैं और शरीर में उभार आता है। इस अवस्था में भय, क्रोध, मान, अपमान का बोध, सत्कार और तिरस्कार की अनुभूति—ये सारे संवेग प्रबल बनते हैं। यदि इस अवस्था के संवेगों को ठीक ढंग से संभाला जाये, उन्हें अनुशासित किया जाये तो जीवन की गाड़ी ठीक पटरी पर चल सकती है। अन्यथा गाड़ी पटरी से नीचे उतर सकती है। **आचार्य महाप्रज्ञ**

जीवन विज्ञान से बदलता है जीवन : आचार्य महाश्रमण

जसोल 26 नव.। आचार्यश्री तुलसी की प्रेरणा से आचार्य महाप्रज्ञ के उर्वर मस्तिष्क में जीवन विज्ञान की परिकल्पना उभरी। केवल सिद्धान्त बोध से परिवर्तन घटित नहीं हो सकता। इसलिये सिद्धान्त के साथ-साथ प्रयोग को स्थान दिया गया। ये विचार पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण ने जीवन विज्ञान दिवस पर व्यक्त करते हुए कहा कि मनुष्य में अपार क्षमता होती है। नैतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा के विकल्प के साथ ही शिक्षा को सार्थक बनाने में जीवन विज्ञान महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वीतराग समवसरण में आयोजित समारोह में बालोतरा एवं जसोल के 10 विद्यालयों से 800 छात्र एवं 15 अध्यापकों ने रैली के रूप में भाग लिया। मंत्रीमुनि मुनिश्री सुमेरमल 'लाडनू' ने अपने उद्बोधन में कहा कि जीवन विज्ञान विद्यार्थी जीवन के लिये आवश्यक है, यह जीवन को व्यवस्थित बनाता है। विद्यार्थियों में जीवन जीने की कला आ जाये तो जीवन की छोटी-छोटी बातों में भी सुधार लाया जा सकता है। **क्रमशः पृ.2, पै.2**



आओ हम जीना सीखें : गति



मानव जीवन बहुत कीमती है। इसको सजाने-संवारने के लिए छोटी लगने वाली बातों पर भी ध्यान देना आवश्यक है। कैसे उठना, कैसे बैठना, कैसे चलना, कैसे बोलना आदि बातें बहुत छोटी लगती हैं पर जीवन-महल को खड़ा करने वाली नींव की ईंटें भी ये ही हैं।

मनुष्य जीवन को मंजिल की ओर गतिमान करने के लिये ज्ञान का प्रकाश और आचरण की सौरभ चाहिए। ज्ञान के आलोक में व्यक्ति अपना आत्मनिरीक्षण करता रहे और सदाचरण की सौरभ से जीवन को महकाता रहे।

जो व्यक्ति उदारचेता होता है, ईमानदार होता है, नशामुक्त जीवन जीने वाला होता है, विनम्र होता है, मृदु होता है, शांत-स्वभावी होता है, बड़ों का आदर करना जानता है, औरों के कल्याण की भावना रखता है, उसका जीवन सद्गुणों की सौरभ से भरा होता है। अपनी प्रज्ञा के प्रकाश में व्यक्ति स्वयं ज्ञांके और देखे उसके जीवन में इन सद्गुणों की सौरभ है या नहीं? यदि है तो निश्चित ही उसकी गति प्रशस्त है। **—आचार्य महाश्रमण।**

जीवन विज्ञान दिवस समारोह

लाडनू 26 नवम्बर। जैन विश्व भारती द्वारा "महाप्रज्ञ अलंकरण" के उपलक्ष्य में जीवन विज्ञान दिवस का भव्य आयोजन आचार्यश्री महाश्रमणजी के विद्वान शिष्य शासन गौरव मुनिश्री धनंजय कुमार के सान्निध्य में सुधर्मा सभा में हुआ। इस अवसर पर आयोजित जीवन विज्ञान रैली में शहर के विभिन्न विद्यालयों से विद्यार्थियों ने अपने-अपने बैनर तले गणवेश में पूर्ण अनुशासन के साथ भाग लिया। विद्यार्थियों के हाथों में संस्कार निर्माण के नारे लिखी हुई तख्तियां एवं उनके द्वारा लगाये जाने वाले उद्घोष लोगों के आकर्षण का केन्द्र रहे। रैली को स्थानीय सेवक चौक से पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती गुलाबरानी भोजक एवं समाजसेवी तेजकरण भोजक ने प्रातः 10:30 बजे हरी झण्डी दिखा कर रवाना किया।

इस अवसर पर सुधर्मा सभा, जैन विश्व भारती में आयोजित मुख्य समारोह में उपस्थित विद्यार्थी, शिक्षक एवं शहर के **क्रमशः पृ.2, पैरा.2.**



मृदुता से मिले सफलता : मुनि किशनलाल

प्रत्येक व्यक्ति सफलता चाहता है। सफलता चाहने से नहीं मिलती है। उसके लिये विनम्रता चाहिए। विनम्रता से व्यक्ति सफलता के शिखर पर पहुँच जाता है।

सामाजिक जीवन में मृदुता का महत्वपूर्ण स्थान है। जो व्यक्ति विनम्र होता है, वह सफलता के सौपान चढ़ता है। मृदुता गुलामी नहीं है और अकड़पन श्रेष्ठता नहीं है। मृदुता को धारण करने वाला रजकण आकाश की सैर करता है और कठोरता रखने वाला पत्थर ठोकरें खाता है। विनम्र व्यक्ति को सभी का प्रेम और आदर मिलता है जबकि अहंकारी एवं कठोर व्यक्ति को घृणा एवं तिरस्कार मिलता है। मृदुता की अनुप्रेक्षा का अभ्यास करने से व्यक्ति में विनम्रता के भाव प्रकट होते हैं।

प्रयोग

1. सुखासन में स्थिरता से बैठकर ज्ञान मुद्रा लगाएं। नौ बार महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करें। कायोत्सर्ग कर शरीर को शिथिल करें।
2. अनुभव करें चारों ओर हरे रंग के परमाणु फैल रहे हैं। दर्शन केन्द्र पर हरे रंग का ध्यान करें। अनुभव करें हरे रंग के परमाणु श्वास के साथ भीतर प्रवेश कर रहे हैं।
3. अनुप्रेक्षा करें – “मृदुता का भाव पुष्ट हो रहा है। अहं का भाव क्षीण हो रहा है।” इस शब्दावली का नौ बार उच्चारण एवं नौ बार मानसिक जाप करें।
4. महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें।

जीवन विज्ञान विद्यार्थी सम्मेलन

सुजानगढ़ 22 नवम्बर। आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी शिष्या शासन गौरव साध्वीश्री राजीमती जी के सान्निध्य में स्थानीय दस्साणी भवन में जीवन विज्ञान विद्यार्थी सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें कस्बे के आठ विद्यालयों से 350 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। आगन्तुक विद्यार्थी एवं शिक्षकों को संबोधित करते हुए साध्वी श्री ने फरमाया कि जीवन विज्ञान जीने की सही राह दिखाता है। यह अंधेरे से उजाले की ओर ले जाने वाला ज्ञान है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने व्यक्ति की बुद्धि को तीक्ष्ण बनाया है किन्तु मानसिक एवं भावात्मक विकास की कमी के कारण सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास नहीं हो पाता, केवल बौद्धिक क्षमता से भावी पीढ़ी का विकास अधूरा रहता है।

जीवन विज्ञान दिवस 26 नवम्बर के उपलक्ष्य में आयोजित इस सम्मेलन का प्रारम्भ ते.पं.महिला मण्डल द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण एवं गाड़ोदिया आदर्श विद्या मंदिर की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत जीवन विज्ञान



गीत से हुआ। मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए के. जी.वि.अ. लाडनू के संयुक्त निदेशक ओमप्रकाश सारस्वत ने कहा कि मन के भावों को परिवर्तित का शुद्ध बनाने का काम जीवन विज्ञान करता है।

सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा ने एकाग्रता एवं स्मृति विकास पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न प्रयोगों का अभ्यास करवाया। साध्वीश्री कुसुमप्रभाजी व समताश्रीजी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में मुम्बई ज्ञानशाला के बच्चों ने लघुनाटिका भी प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन पवनराज नाहटा ने किया। इस अवसर पर पार्षद मधु बागरेचा, सुनिता भूतौड़िया, प्रवीण शर्मा, कमल डागा, जतनलाल बैद, भूपेन्द्र छाजेड़, पत्रालाल पगारिया, विजया रामपुरिया एवं नवरतन बैद आदि अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

क्रमशः पृ.1,पै.1 प्रे.प्रा.मुनिश्री किशनलाल ने कहा कि जीवन विज्ञान जीने का नया दर्शन है। शिक्षा के द्वारा अच्छी पीढ़ी का निर्माण हो, अच्छा समाज व संस्कारी नागरिक बने, यह केवल आकांक्षा से पूर्ण नहीं होता; इसके लिये शिक्षा प्रणाली में भावात्मक विकास के पक्ष को स्थान देना होगा। सही मुद्रा, सही श्वास, सही नींद, सही सोच आदि से हम विद्यार्थियों के जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं।

समारोह का शुभारम्भ मुनिश्री नीरजकुमार द्वारा प्रस्तुत जीवन विज्ञान गीत से हुआ। उपस्थित विद्यार्थियों में से प्रियंका व शिवानी ने गीतिका के माध्यम से अपने भावों को व्यक्त किया। जीवन विज्ञान प्रभारी रमेश बोहरा ने आभार व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों के सफल जीवन हेतु जीवन विज्ञान को अपनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में प्रशिक्षक महेन्द्र कुमावत, सफरू खान, लखमीचन्द कोठारी, महेन्द्र छाजेड़ आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

क्रमशः पृ.1,पै.2. गणमान्य नागरिकों को सम्बोधित करते हुए मुनिश्री धनंजयकुमार ने बताया कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ को ‘महाप्रज्ञ अलंकरण’ मिलने के पश्चात ‘जीवन विज्ञान’ उनके द्वारा प्रतिपादित प्रथम अवदान है जो शिक्षा क्षेत्र के अधूरेपन मानसिक एवं भावात्मक विकास के आयाम को विद्यार्थियों तक पहुंचाने में सफल है। विद्यार्थियों को कोरे कागज की उपमा देते हुए मुनिश्री ने क्रोधशमन के लिये दीर्घश्वास प्रेक्षा का प्रयोग करवाया।

समारोह के मुख्य अतिथि नगरपालिका अध्यक्ष बच्छराज नाहटा ने जैन विश्व भारती की स्थापना एवं जीवन विज्ञान के प्रादुर्भाव के ऐतिहासिक क्षणों की याद दिलाते हुए विद्यार्थियों को अपने जीवन में सदाचार को अपनाने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो.जे.पी. एन. मिश्रा ने कहा कि जीवन में श्वास का जितना महत्व है उतना ही महत्व नैतिकता एवं चरित्र का है। जीवन विज्ञान व्यक्ति को नैतिक जीवन जीने की राह दिखाता है। जैन विश्व भारती अध्यक्ष ताराचन्द रामपुरिया ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द, महात्मागांधी, आचार्य विनोबा भावे, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ आदि महान विभूतियों ने समाज सुधार के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किया है। जीवन विज्ञान समाज सुधार की दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। समाजसेवी ललित वर्मा, नेपालचन्द गंग एवं जै.वि.भा. के मुख्य कार्यकारी अधिकारी हेमन्त नाहटा ने भी अपने विचार व्यक्त किये। संयुक्तमंत्री जीवनमल मालू ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। जीवन विज्ञान अकादमी के संयुक्त निदेशक ओमप्रकाश सारस्वत ने आभार ज्ञापित किया।

इस दिवस के उपलक्ष्य में जीवन विज्ञान अकादमी द्वारा निबंध लेखन एवं रैली प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। रैली प्रतियोगिता में विमल विद्या विहार सी.सै. स्कूल ने प्रथम, मदनलाल भंवरीदेवी आर्य मेमोरियल स्कूल द्वितीय, मौलाना आजाद पब्लिक स्कूल तृतीय तथा सुभाष बोस शिक्षण संस्थान विद्यालय ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। इसी प्रकार निबंध लेखन प्रतियोगिता में दयानन्द सरस्वती माध्यमिक शिक्षण संस्थान की छात्रा मनीषा चौधरी ने प्रथम, विमल विद्या विहार सी.सै. स्कूल की प्रियंका चिण्डालिया ने द्वितीय, सुभाष बोस शिक्षण संस्थान के छात्र नरेन्द्र टाक ने तृतीय एवं न्यू बाल शिक्षण संस्थान के छात्र मो. आसिफ खिलजी ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को प्रतीक चिन्ह एवं नगद राशि से पुरस्कृत किया गया। निबंध प्रतियोगिता के निर्णायक नेपालचन्द गंग रहे इसी प्रकार रैली प्रतियोगिता हेतु ललित वर्मा, चांदकपूर सेठी एवं नेपालचन्द गंग ने निर्णायक का दायित्व सफलतापूर्वक वहन किया। जीवन विज्ञान के प्रायोगिक प्रयोगों के साथ जीवन विज्ञान अकादमी के सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में लक्ष्मीपत सुराणा, सम्पत खटेड़, विजयश्री, दिनेश सोनी, रामेश्वर शर्मा, महावीर प्रजापत, मनीष भोजक, सुशील मिश्रा, चंदनमल भोजक आदि कर्मचारियों का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।